शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा वर्ष 2017 में आयोजित "वृक्ष उत्पादक मेला" एवं विभिन्न पर्यावरणीय दिवसों के आयोजन का विवरण

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा वर्ष 2017 में आयोजित "वृक्ष उत्पादक मेला" एवं विभिन्न पर्यावरणीय दिवसों के आयोजन का विवरण इस प्रकार हैं -

''वृक्ष उत्पादक मेला'' (Tree Growers Mela)
21 मार्च 2017

दिनांक 21/03/2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में ''वृक्ष उत्पादक मेला'' (Tree Grower's Mela) का आयोजन किया गया। ''विश्व वानिकी दिवस'' पर आयोजित मेला में वृक्ष उत्पादकों, किसानों, स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों, वन विभाग सहित राजकीय विभागों के प्रतिनिधियों सहित कुल 208 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथी डॉ. ओ.पी.यादव, निदेशक, केद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI) जोधपुर ने विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम को अच्छा आयोजन बताते हुए अपने संबोधन में कहा कि पेड़ हमारे जीवन, पर्यावरण तथा पशु-पक्षियों इत्यादि के लिए प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से कितनी भलाई का कार्य करते हैं, इससे हम वाकिफ हैं। बतौर मुख्य अतिथि अपने सम्बोधन में डॉ. यादव ने कहा कि पेड़ों की महत्ता आज से नहीं सदियों से हम जानते हैं तथा मरुस्थल के प्रसार को रोकने के लिए भी उपाय वृक्षारोपण ही, दशकों पूर्व सुझाया गया था। डॉ. यादव ने कहा कि कालांतर में बढ़ती आवश्यकताओं के कारण वनों का ह्वास हुआ, जिसके कारण पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, इसे रोकने का भी अगर कोई सशक्त माध्यम है तो, वो पेड़ लगाना ही है, बढ़ती आबादी तथा परिणामस्वरूप बढ़ती मांग के मद्देनजर, खेती की जमीन की आवश्यकता भी बढ़ी है, इन बढ़ती मांगों के कारण वन एवं वन क्षेत्र पर दबाव बढ़ा है। उन्होंने कहा कि हमारी आवश्यकताएँ और बढ़ेंगी इसलिए आवश्यकता इस बात की है, जो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से पेड़ों से संबंध रखते हों, चाहे वे किसान हों, या फिर आफरी, काजरी जैसी अनुसंधान संस्थाएं, वन विभाग जैसे सरकारी विभाग हों अथवा गैर-सरकारी संस्थाएं, आज आवश्यकता इस बात की है कि हमें पेड़ लगाने के नए-नए आयाम खोजने पड़ेंगे। डॉ. यादव ने कहा कि जो भूमि खेती के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं उसमें भी हमें पेड़ों को लाना होगा। डॉ. यादव ने कहा कि बढ़ती आबादी के मद्देनजर जमीन की उपलब्धता कम ही होगी अतः जब तक खेती के अंदर पेड़ों का समावेश नहीं करेंगे तब तक पेड़ों का पूरा फायदा हमारे दैनिक जीवन में तथा पर्यावरण को नहीं मिलेगा। डॉ. यादव ने बताया कि अनुसंधान से ये निष्कर्ष निकले हैं कि कृषि के साथ ऐसे पेड़ लगाए जाएँ विशेषकर खेतों की मेड़ पर जिनसे न केवल पर्यावरण सुरक्षा में मदद मिले बल्कि ये पेड़ किसान की आय वृद्धि का जरिया बनें। उन्होंने कुमट जैसे पेड़ों को मेड़ पर लगाकर आय बढ़ाने तथा पर्यावरण संरक्षण करने का आहवान करते हुए बताया कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सब की सहभागिता से हम सबको साथ में आकर काम करना होगा तथा इस आवश्यकता के दृष्टिकोण से आफरी द्वारा किया गया आज का ये कार्यक्रम (वृक्ष उत्पादक मेला) बहुत ही अच्छा प्रयास है तथा इस कार्यक्रम के अनुभव के आधार पर इस तरह के कार्यक्रम प्रतिवर्ष किए जाएँ ताकि अच्छे संदेश लोगों में जाते रहें। उन्होंने कहा कि आज इस कार्यक्रम में हर पणधारी (stackholder) मौजूद है, किसान से लेकर NGO तक, कृषि विभाग, वन विभाग, अनुसंधान संस्थाएं हम सब लोग अगर साथ आ जाएँ तो पर्यावरण की दृष्टि से यह क्षेत्र आगे बढ़ेगा। इस से किसानों की आय बढ़ेगी, सूखे के प्रभाव और जलवायु परिवर्तन के असर को भी कम करने में हम सफल रहेंगे।

आफरी निदेशक, श्री एन.के.वासु ने उपस्थित अथितिगण का स्वागत करते हुए कहा कि इतने सम्मानीय लोगों की उपस्थिति से हम गौरवान्वित हुए हैं। श्री वासु ने विश्व वानिकी दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम में अपने संबोधन में कहा कि वनों के बारे में, संसाधनों के उपयोग के बारे में जनजागरण की भूमिका अहम है। उन्होंने दीर्घ-काल के अपने अनुभवों के आधार पर मरुस्थलीय विषम परिस्थितियों में वृक्षारोपण से हुए टिब्बा स्थिरीकरण का जिक्र किया। श्री वासु ने कहा कि हमारी नर्सरी (आफरी नर्सरी) से लोग पौधे ले जाते हैं तथा पौधारोपण के बारे में जानकारी लेते हैं एवं इस क्षेत्र में काफी लोग हैं जो वृक्ष लगाने में रुचि रखते हैं तथा कुछ ने इस कार्य में विशेषज्ञता हासिल कर ली है। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण, जल स्वावलंबन, मरु प्रसार को रोकना हो, वृक्षारोपण हो, किसी भी कार्यक्रम में पौधों का बड़ा योगदान है, वन क्षेत्र के बाहर जो वृक्षारोपण होना है, उसमें भी लोगों की भागीदारी अहम है, इसी पृष्ठभूमि के मद्देनजर इस संस्थान के माध्यम से लोग एकत्र हुए हैं, वे सही मायने में वनों से, वनों के संरक्षण से, पौधों से जुड़े हुए हैं। श्री वासु ने कहा कि इस तरह के आयोजन की नियमित आवश्यकता

है, क्योंकि वानिकी अकेले आगे नहीं बढ़ सकती, अब समय आ गया है कि वानिकी से जुड़े लोग, कृषि से जुड़े लोग, पशुपालन से जुड़े लोग, जल संरक्षण से जुड़े लोग, पंचायती राज संस्थाओं से जुड़े लोग जब तक एक साथ आगे नहीं आएंगे तब तक सही मायने में सफलता नहीं मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन से सब लोग साथ आएंगे, इनके बीच में परस्पर संवाद होगा, तभी सही मायने में वानिकी अनुसंधान उपयोगी होगा व गाँव तक पहुँचेगा। श्री वासु ने कहा कि आफरी नर्सरी में विभिन्न प्रजातियों के पौधे तैयार किए जाते हैं जिनमें चन्दन के पौधे भी शामिल हैं इन पर भी चर्चा होगी। श्री वासु ने कहा कि आगे भी आप लोग इसी तरह संस्थान से जुड़े रहें। सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएं मिलकर ऐसे कार्य करें ताकि जितने भी वानिकी संबन्धित कार्यक्रम हैं, उनमें सभी का योगदान रहे।

डॉ. गोविंदसागर भारद्वाज, मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर ने पर्यावरण प्रेमियों, वृक्ष उत्पादकों को संबोधित करते हुए कहा कि आज हमें विचार करना पड़ेगा कि जिस गति से जलवायु परिवर्तन हो रहा है उसको कैसे रोकें, हमारे वन क्षेत्रों को कैसे बचाएं तथा उनमें कैसे वृद्धि हो, इसके लिए कई संस्थाएं और व्यक्ति काम कर रहे हैं लेकिन जिस तीव्र गति से पर्यावरण का विनाश हो रहा है उसके लिए हर इंसान को चाहे वह किसी भी क्षेत्र से हो, जागरुक होना पड़ेगा, वन क्षेत्र को राष्ट्रीय नीति के अनुरूप लाने के लिए जागरूकता लानी पड़ेगी, हम इस हेतु जन्म दिन एवं सालगिरह जैसे अवसरों पर भी पेड़ लगाकर अपना योगदान दे सकते हैं। उन्होंने बताया कि जिस तरह से हमारी जीवन पद्धति (Life Style) परिवर्तित हुई है, आधुनिक तकनीक आई है, उससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है, अब हमें इन प्राकृतिक संसाधनों चाहे बिजली हो, पानी या फिर कोई अन्य प्राकृतिक संसाधन हों, उनका मितव्ययता से उपयोग करना होगा। श्री भारद्वाज ने कहा कि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का केवल अपने स्वार्थ के लिए दोहन नहीं करें, इसी में ही बुद्धिमानी है।

इस अवसर पर बोलते हुए संस्थान के समूह समन्वयक (शोध) डॉ. टी. एस. राठौड़ ने कहा कि गर्व का विषय है कि इस तरह का मेला, जिसकी आवश्यकता काफी पहले से थी तथा बहुत ही कम समय में जिसे संभव किया गया है, जिसमें राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से कृषक, व्यक्ति, वृक्ष उत्पादक, NGOs आए हैं। डॉ. राठौड़ ने बताया कि कम वर्षा और तापमान की चरम दशा जैसी परिस्थितियों के बावजूद यहाँ की जैव विविधता, जो कि जीवन का आधार है काफी अच्छी है, इसका पर्यावरण, फसल प्रबंधन, औषधीय पादप आदि में बड़ा महत्व है। डॉ. राठौड़ ने राष्ट्रीय एवं राज्य वन नीति के संदर्भ में वनों से बाहर वृक्ष आवरण का महत्व बताते हुए कहा कि पेड़ हमारी मृदा का स्वास्थ्य तथा पैदावार को बचाने के लिए सबसे बड़ी भूमिका निभाते हैं, हम जीवनयापन के लिए कृषि वानिकी, उद्यानिकी व औषधीय पादपों को लगाते हैं यह विविधता और समृद्ध जैव विविधता का न केवल अभिन्न हिस्सा है बल्कि आवश्यकता भी है। डॉ. राठौड़ ने मांग की आपूर्ति के लिए जंगलों से बाहर (कृषि भूमि, सामुदायिक भूमि, राजस्व भूमि) के पेड़ों की महत्ता बताई। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन का जो खतरा इस क्षेत्र के लिए अधिक है उसके प्रभाव को कम करने के लिए जमीन की पैदावार को सुरक्षित रखने व, मृदा स्वास्थ्य बरकरार रखने के लिए, कृषि भूमि पर वृक्षों का उत्पादन आवश्यक है, कौन से पौधे लगाने चाहिए इसके लिए सदियों से परीक्षण पर खरी उतरी प्रजाति जैसे खेजड़ी, रोहिडा,नीम, शीशम, बबूल का जिक्र किया कि इनकी मांग भी अच्छी है, विशेषकर हैंडीक्राफ्ट उद्योग में देशी बबूल, शीशम और आम । उन्होंने कहा कि हम आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश करेंगे, संस्थान का अनुसंधान सरल भाषा में आप तक पहुँचें, ऐसा प्रयास करेंगे। आपकी समस्याएँ, विचार, उम्मीदें हमें बताइये ताकि हम अगली बार और बेहतर तरीके से इसे आयोजित करें। उन्होंने कहा कि आप यहाँ पर आपस में अपने अनुभव और विचार भी साझा करें, एक दूसरे से बात करें, आपकी समस्याएँ हमें बताइये, हमसे जुड़े रहें। डॉ. टी. एस. राठौड़, ने सभी अतिथियों, आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इससे पूर्व मेला के समारंभ सत्र में श्री उमाराम चौधरी, प्रभागाध्यक्ष, कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग ने मेला का उद्देश्य एवं विषय-वस्तु से आगन्तुकों को अवगत कराया।

समारंभ सत्र के कार्यक्रम का संचालन डॉ. संगीता सिंह, वैज्ञानिक-ई ने किया। कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आई.डी.आर्या, डॉ. जी. सिंह, डॉ. रंजना आर्या सहित संस्थान के वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

मेला के दौरान संस्थान के सभागार में कार्यशाला का आयोजन रखा गया, जिसमें तकनीकी सत्र में विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा संभाषण दिये गए। तकनीकी सत्र के प्रारम्भ में समूह समन्वयक (शोध) डॉ. टी.एस.राठौड़ ने पावर पोईंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संस्थान तथा संस्थान की शोध गतिविधियों, विकसित तकनीकों, उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध करायी। काजरी (Central Arid Zone Research Institute) के डॉ. पी. आर. मेघवाल, प्रधान वैज्ञानिक

(Principal Scientist) ने बागवानी से संबन्धित पौधों के बारे में व्याख्यान दिया। प्रगतिशील कृषक एवं वृक्ष उत्पादक श्री हिम्मतराम भाम्बू ने अपने व्याख्यान में वृक्षों एवं उनके संरक्षण के बारे में बताया।

मेला में भाग लेने वाले विभिन्न वृक्ष उत्पादकों ने भी कार्यशाला में अपने अनुभव और विचार साझा किए। राजस्थान राज्य औषधीय पादप बोर्ड (Rajasthan State Medicinal Plant Board) के प्रतिनिधि सहायक वन संरक्षक श्री सुखराम काला ने राजस्थान के औषधीय पौधों की विविधता तथा गुणवत्ता के बारे में बताते हुए कृषि वानिकी में औषधीय पौधों के समावेश से किस तरह कृषि आय बढ़ सकती है, इसकी जानकारी दी । इस हेतु श्री काला ने अरडु व ग्वार-पाठे का उदाहरण भी दिया। श्री काला ने बताया कि जड़ी, बूटी, झाड़ी, वृक्ष (herb, shrub, Tree) का संयोजन कर बहु- स्तरीय (Multi-tier) खेती कर औषधीय पौधों के कृषि-करण से कृषि आय में वृद्धि की जा सकती है । श्री काला ने सुझाया कि हमें इस क्षेत्र में ऐसे पौधे जिन्हें कम पानी की आवश्यकता है, का चयन करना चाहिए ।

श्री नारायण दास प्रजापति ने राजस्थान में कुदरती पैदा होने वाली जड़ी बूटियों तथा उनके मूल्य- संवर्धन की चर्चा करते हुए बताया कि रेगिस्तानी विपरीत परस्थितियों में भी जड़ी बूटियों की खेती करके किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। उन्होंने, किस चीज़ की मांग है, इसका भी ध्यान रखने, कौनसे पेड़ लगाने चाहिए, किससे कितना फायदा है, कहाँ मार्केटिंग कर सकते हैं इसकी जानकारी हेतु आपस में समन्वयन, अलग-अलग प्रजातियों जैसे अनार, सोनामुखी, ग्वारपाठा, कुमट, गुग्गल इत्यादि के लिए जानकारियों के आदान-प्रदान से बेहतर समन्वयन की भी चर्चा की। उन्होंने इस क्षेत्र में चन्दन की संभावना की चर्चा करते हुए कहा कि इसका काम आगे बढ़ा सकते हैं। श्री प्रजापति ने कार्बन क्रेडिट, कार्बन इकोनोमी की चर्चा की तथा इस बारे में वृक्ष उत्पादकों को जानकारी की आवश्यकता बतायी। श्री रतनलाल डागा ने किसानों के खेत में भी पर्यावरण की दृष्टि से भी कृषि के साथ-साथ पेड़ भी पनपाने की चर्चा करते हुए बताया कि पेड़ों के कम होने से जैविक खेती की जगह रासायनिक खेती आ गयी । यदि हमें खेती को बचाना है तो इसके लिए जैविक खेती की ओर बढ़ना होगा और इस हेतु पेड़ लगाने ही होंगे । उन्होंने कहा कि खेती के बचाव हेतु खेत पर अथवा बाउंड्री पर पेड़ लगाने होंगे, ये पेड़ (बाउंड्री वाले पेड़) गरम व शरद हवा से बचाव करेंगे। पेड़ों से बरसात में होने वाला भूमि का कटाव भी कम होगा। श्री डागा ने इस तरह के आयोजन गांवों में करने का जिक्र करते हुए कहा कि कम्पोस्ट बनाने का प्रचार-प्रसार करना चाहिए क्योंकि पेड़ों की पत्तियों को मिश्रित करके कम्पोस्ट बनाने से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकते हैं।

श्री अजय गोस्वामी ने पर्यावरण के लिए आवश्यक वृक्षारोपण हेतु चेतना (awareness) फैलाने पर ज़ोर देते हुए आह्वान किया कि वृक्षारोपण का संदेश खास कर पौधा कैसे लगाएं आदि जानकारी हमारे परिवार, हमारे समाज विशेषकर बच्चों में आगे से आगे फैलानी चाहिए। वृक्षारोपण में क्रियान्वयन स्तर पर भागीदारी होने से उसके रख-रखाव में भी वह व्यक्ति / बच्चा अपनापन ही समझेगा।

श्री गणेशराम प्रजापति ने पौधा लगाने एवं रख-रखाव के लिए तकनीक एवं बारीकियों को सांझा करते हुए बताया कि पौधा तैयार करते समय कम्पोस्ट का उपयोग करना चाहिए इसलिए कम्पोस्ट कैसे तैयार करते हैं इसे बताया जाना चाहिए। श्री प्रजापति ने पेड़ों की रक्षा/ संरक्षण हेतु जन-भागीदारी की जरूरत भी बतायी। इस पर निदेशक महोदय श्री एन.के. वासु जी के निर्देशानुसार आफरी नर्सरी के श्री सादुलराम देवड़ा ने घास-फूस एवं पत्तियों से कम्पोस्ट तैयार करने की विधि बतायी तथा बताया कि कम्पोस्ट तैयार करते समय पानी का छिड़काव कर नमी बनाए रखनी चाहिए ताकि समय पर खाद तैयार हो सके।

कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री एल.एन.हर्ष ने बताया कि जो खेत में काम करते हैं वो ही जानतें हैं क्या तकलीफ़ें आती हैं, वो किसान जानता है और उन्हें वह ठीक भी कर देता है फिर हमें सिखाता है कि ये हमने ऐसे किया इसलिए आप लोगों के साथ रहकर मैं भी सीखूँगा।

श्री खामूराम विश्नोई ने प्लास्टिक के कचरे के बारे में कहा कि इसने हमारे गाँव, तालाब, नदियों, अहाते इत्यादि में गंदगी से यहाँ तक कि हमारी जीवन शैली को जकड़ लिया है। इसलिए हमारे पर्यावरण हमारे जंगल इत्यादि से इसे दूर रखना चाहिए, इसके उपयोग से बचना चाहिए।

श्री अनिल कुमार धाबाई ने हरित तकनीक (Green Technology) से प्लास्टिक के पुनरचक्रण (Recycle) की बात बतायी तथा चन्दन के पौधों की भी चर्चा करते हुए बताया कि यह इस जलवायु में पनप सकता है और इससे किसान की अर्थव्यवस्था बदल सकती है।

श्री पूरण सिंह ने पर्यावरण एवं वृक्षों के भावों से ओतप्रोत कविता सुनाई। श्री प्रसन्नपुरी गोस्वामी ने पहाड़ी को हरा भरा करने की तकनीक जैसे कैसे गड्ढे खोदे, जल संरक्षण हेतु चेक डेम इत्यादि का अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि किस तरह से वृक्षारोपण द्वारा किसी क्षेत्र में हरियाली लायी जा सकती है तथा फलस्वरूप वहाँ की जैव-विविधता में बदलाव आ सकता है। उन्होंने औषधीय उद्यान विकसित करने के अनुभव भी बताते हुए कहा कि बचपन से ही बच्चों में वृक्षों के प्रति प्रेरणा भरनी चाहिए।

मेला में संस्थान के सामुदायिक भवन में विभिन्न राजकीय विभागों/संस्थानों वन विभाग, राजस्थान की वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समितियों एवं स्वयं सहायता समूह, स्वयं सेवी संस्थाओं, उद्यमियों ने अपने-अपने स्टॉल लगाकर वानिकी से जुड़ी गतिविधियों तथा उत्पादों का प्रदर्शन किया। केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI) जोधपुर, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण (B.S.I) जोधपुर, वन विभाग राजस्थान के वन मण्डल, डी.डी.पी. जैसलमेर, ई.गा.न.प. स्टेज II जैसलमेर, उदयपुर, प्रतापगढ़, पाली एवं सिरोही की वन सुरक्षा एवं प्रबंध समितियों व स्वयं सहायता समूह, कृषि विज्ञान केंद्र, दांता बाड़मेर इत्यादि ने स्टॉल लगाकर अपनी-अपनी गतिविधियों एवं उत्पादों का प्रदर्शन किया। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर (आफरी) द्वारा भी स्टॉल लगा कर अपनी अनुसंधान गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनी में आफरी की प्रयोगिक एवं उच्च तकनीक पौधशाला में तैयार पौधे खेजड़ी, जामुन(बड़ा), कैर, गुग्गल, चन्दन, धोक, महानीम (*Melia dubia*), अर्जुन, शीशम, मीठा जाल, खारा जाल, रोहिडा, अश्वगंधा, चिरमी, नीमगिलोय, अंजीर, शतावरी, सफ़ेद मूसली इत्यादि पौधों का प्रदर्शन किया गया। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर ने इस अवसर पर अपने चिकित्सकों के दल द्वारा न केवल प्रदर्शनी हेतु स्टॉल लगाया बल्कि दिनभर आगुन्तकों को आयुर्वेदिक चिकित्सा परामर्श भी दिया तथा आयुर्वेदिक औषधियां भी वितरित की।

मेले में भाग लेने वाले वृक्ष उत्पादकों ने इस प्रदर्शनी को बड़ी रुचि से देखा। मरु वन प्रशिक्षण केंद्र के 82 वनपाल प्रशिक्षणार्थियों ने प्रदर्शनी में लगी विभिन्न स्टॉलों का अवलोकन कर स्वयं सहायता समूह, स्वयं सेवी संस्थाओं, वानिकी से संबन्धित गतिविधियों, वानिकी उत्पादों, आफरी, काजरी जैसी संस्थाओं की अनुसंधान गतिविधियों का गहनता से अध्ययन कर जानकारी ली। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान के अधिकारी/वैज्ञानिक/शोध-कर्ताओं, कार्मिकों ने भी प्रदर्शनी का अवलोकन कर विभिन्न जानकारियों का लाभ उठाया। आफरी परिसर में रहने वाले परिवारों के सदस्यों ने भी प्रदर्शनी का लाभ उठाया।

मेला कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. ओ.पी.यादव निदेशक, काजरी ने भी निदेशक आफरी श्री एन.के.वासु तथा अन्य अधिकारियों/ वैज्ञानिकों के साथ प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

प्रदर्शनी में लगे स्टॉलों' का वरिष्ठ वैज्ञानिकों के दल द्वारा मुआयना कर पारितोषिक हेतु स्टॉलों का चयन किया गया। प्रथम पुरस्कार कृषि विज्ञान केंद्र, दांता, बाड़मेर को द्वितीय पुरुस्कार कल्टीवेटर नेचुरल प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, जोधपुर तथा तृतीय पुरस्कार मण्डल प्रबंध इकाई, पाली एवं व.सु. एवं प्र.स. वन मण्डल, ई.गा.न.प. स्टेज–II जैसलमेर को दिया गया।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. टी.एस.राठौड़ ने चन्दन के वृक्ष का कृषि वानिकी में उत्पादन आदि पर विस्तृत जानकारी दी।

वृक्ष उत्पादकों ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर वहाँ प्रदर्शित अनुसंधान संबंधी विभिन्न सूचनाओं तथा अन्य वानिकी संबंधी सामग्री का अवलोकन किया। यहाँ श्रीमती भावना शर्मा, वैज्ञानिक डी एवं मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक ने आगुन्तकों को विभिन्न जानकारी उपलब्ध करायी।

इसके बाद वृक्ष उत्पादक मेले के प्रतिभागियों ने संस्थान की उच्च तकनीक एवं प्रायोगिक पौधशाला का भ्रमण कर पौधशाला प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त की। पौधशाला स्थित औषधीय पौधों के जर्मप्लाज्म बैंक में औषधीय पौधों का भी अवलोकन किया। श्री सादुलराम देवड़ा, नर्सरी प्रभारी ने वृक्ष उत्पादकों को नर्सरी संबंधी जानकारी उपलब्ध करायी तथा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। वृक्ष उत्पादक मेला के प्रतिभागियों को चन्दन के 180 पौधे भी उपलब्ध कराये गए।

प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किए गए। संस्थान में मेला आयोजन की अलग-अलग व्यवस्था हेतु विभिन्न समितियों का गठन किया गया, जिन्होंने ज़िम्मेदारीपूर्वक तमाम व्यवस्था को संभाल कर मेला का व्यवस्थित एवं सफल आयोजन किया, जिसमें सभी का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

वृक्ष उत्पादक मेला
TREE GROWERS MELA
21st March, 2017
ARID FOREST RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR
Dr. O.P. Yadav
Shri. N.K. Vasu
G.S. Bhardwaj

Shri Uma Ram Choudhary

TREE GROWERS MELA
Dr. T.S. Rathore

TREE GRO
Dr. O.P. Yadav
Director, CAZRI
Shri. N.K. Vasu

TREE GROWERS MELA
Dr. T.S. Rathore

सुस्वागतम्
भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण , जोधपुर
सत्यमेव जयते

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण
जोधपुर

वनविभाग राजस्थान सरकार
अगरबत्ती बिक्री केन्द्र
वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति,धामनिया जागीर/बान्सी
के स्वयं सहायता समुह द्वारा उत्पादित
रेन्ज बान्सी वन मण्डल प्रतापगढ (राज.)
" उत्पाद की बिक्री का पूर्ण लाभ
गरीब आदिवासीयों को मिलता है। "
वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति,
यह हर्बल गुलाल पुष्प, हरी पत्तियों (वनस्पतियों) द्वारा
बना है, इसके प्रयोग से आँखो, त्वचा व पर्यावरण का
बिक्री का समस्त लाभ वनवासियों
बिक्री केन्द्र

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण
जोधपुर
भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, जोधपुर

Important Plants of Rajasthan
Diversity of Desert Plants

भाकृअनुप -केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

भोलेनाथ स्वयं सहायता समूह
डाबला (जैसलमेर)
वन मण्डल – डी.डी.पी. जैसलमेर
आय सृजन गतिविधि – गूगल के पौधे तैयार कर बेचना

विश्वविद्यालय, जोधपुर
करता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, दांता बाड़मेर
आपका हार्दिक स्वागत करता है।

1. "विश्व जल दिवस" (22 मार्च 2017)

दिनांक 22.3.2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में विश्व जल दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में कृषि वानिकी एव विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमा राम चौधरी, भा॰व॰से॰ ने जल संरक्षण की आवश्यकता बताते हुए "विश्व जल दिवस" की महत्ता तथा इस वर्ष के विषय (Theme) पर प्रकाश डाला । आफरी के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न वक्ताओं ने जल एव इसके संरक्षण पर अपने विचार रखे। संस्थान के निदेशक श्री एन. के. वासु ने अपने संबोधन में पुरातन काल से उत्तरोत्तर परिवर्तनों का जिक्र करते हुए जल का प्रबंधन कैसे हो, पानी के संरक्षण एवं प्रबंधन पर ध्यान देने की आवश्यकता बताई । उन्होंने पानी के संरक्षण के अनुभवों को भी साझा किया कि किस तरह लोग पहले अच्छी तरह से पानी का प्रबंधन करते थे किन्तु अब वे परम्पराएँ लुप्त हो गयी हैं। श्री वासु ने पेड़ों को दिये जाने वाले पानी की मात्रा का जिक्र करते हुए बताया कि यह समुचित तादाद में ही होनी चाहिए I

संस्थान के समूह समन्वयक (शोध), डॉ॰ टी॰एस॰ राठौड़ ने कहा कि पानी का विवेकपूर्ण एंव वैज्ञानिक रीति से उपयोग होना चाहिए अन्यथा कम होते पानी के कारण समस्याएँ आ सकती हैं। उन्होंने जहां एक ओर ऐसी स्थानीय वृक्ष प्रजातियों की आवश्यकता बताई जिन्हें कम पानी की जरूरत हो वहीं कृषि में भी हमारी सोच में परिवर्तन की आवश्यकता बताई । फसल

पद्धति (cropping pattern) भी ऐसी हो, जिसमें पानी का समुचित उपयोग हो, हमें अपनी सोच में परिवर्तन कर इस हेतु तकनीक के विकास की भी आवश्यकता है ।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ जी०सिंह ने इस अवसर पर पानी के बर्बाद होने तथा अपशिष्ट जल से संबन्धित पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण दिया ।

वैज्ञानिक श्री एन०बाला ने पेयजल की उपलब्धता से संबन्धित जानकारी देते हुए पौधों को जरूरत के हिसाब से पानी देने की बात कही । श्री बाला ने कहा कि पौधों को बचाने के लिए पौधों को जितना पानी चाहिए उतना ही पानी देना चाहिए । पौधों की सिंचाई में भी अनावश्यक पानी बर्बाद नहीं करना चाहिए |

वैज्ञानिक डॉ० एन०के०बोहरा ने जल एव जल संरक्षण की चर्चा करते हुए इसके संरक्षण के लिए सबका आहवान किया । श्री अनिल शर्मा ने भी पानी के सदुपयोग का आहवान करते हुये इसके संरक्षण की आवश्यकता प्रतिपादित की |

कार्यक्रम का संचालन वैज्ञानिक-डी, श्रीमती भावना शर्मा ने किया तथा धन्यवाद डॉ० बिलास सिंह, वैज्ञानिक ''बी'' ने दिया | कार्यक्रम के आयोजन में श्री रतना राम लोहरा, अनुसंधान सहायक- प्रथम, श्री महिपाल बिशनोई, अनुसंधान सहायक-द्वितीय तथा श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक का विशेष सहयोग रहा |

2.''पृथ्वी दिवस'' (22 अप्रैल 2017)

दिनांक 22-4-2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में "पृथ्वी दिवस" मनाया गया | संस्थान के निदेशक श्री एन॰के॰वासु, भा॰व॰से॰ ने पृथ्वी दिवस के अवसर पर अपने संबोधन में इस तरह के आयोजन से उत्पन्न विचार विमर्श पर वास्तविक क्रियान्वयन पर ज़ोर दिया | आधुनिकतम तकनीकों में जो खामियां रह गयी हैं उनका जिक्र करते हुए श्री वासु ने पृथ्वी को बचाने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी सब कुछ ठीक-ठाक बचाये रखने का आह्वान किया | विचारों के क्रियान्वयन हेतु श्री वासु ने उपलब्ध टूलकिट्स (toolkits) का भी जिक्र किया । श्री वासु ने इस वर्ष की विषय वस्तु (theme) – "पर्यावर्णीय एवं जलवायु साक्षरता" का उल्लेख किया तथा कहा कि पर्यावरणीय विज्ञान जरूरी हैं लेकिन विज्ञान तथा हमारी अनुसंधान उपलब्धियों को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए बिल्कुल सरल भाषा का उपयोग होना चाहिए |

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. गोविंद सागर भारद्वाज, मुख्य वन संरक्षक, ने आंकड़ो के जरिये कार्बन उत्सर्जन आदि का विवरण देते हुए बताया कि इस वजह से भूमंडलीय ताप में वृद्धी का जलवायु परिवर्तन पर क्या असर पड़ेगा | श्री भारद्वाज ने कहा कि हमें अपनी जीवन शैली में परिवर्तन कर बढ़ती आवश्यकताओं को कम कर, संसाधनों का मितव्ययता से उपयोग करना होगा तथा हमारी पृथ्वी को बचाना होगा और इसमें हम सब मिल कर (सामान्य जन) बड़ा बदलाव ला सकेंगे |

इस अवसर पर संस्थान के समूह समन्वयक (शोध) डॉ॰ आई॰डी॰आर्या ने पृथ्वी दिवस का विगतवार ऐतिहासिक विवरण बताते हुए कहा कि वर्ष के विषय वस्तु (Theme) अनुसार विद्यालयों में अथवा गोष्टी इत्यादि के माध्यम से पर्यावरण साक्षरता को बढ़ावा देना चाहिए ।

डॉ॰ रंजना आर्या वैज्ञानिक ''जी'' ने हार्वेस्टेड वुड प्रॉडक्ट और कार्बन क्रेडिट के बारे में बताया | वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ जी॰सिंह ने परिवहन के जरिये वायु-प्रदूषण, ऊष्मा-विकिरण, तापमान में वृद्धी, कौनसे पौधे लगाए जाएँ इत्यादि पहलुओं पर वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी दी । रेल्वे के वरिष्ठ अनुभाग इंजीनियर श्री जी.एस.पांडे ने हमारी परम्पराओं की चर्चा करते हुए पर्यावरण संरक्षण करने के लिए तमाम तरह के प्रदूषण को रोकने तथा वृक्षारोपण कर पृथ्वी की संरक्षा करने का आहवान किया | पर्यावरण प्रेमी श्री प्रदीप शर्मा ने पर्यावरण से संबंधी कविता सुनायी |

वैज्ञानिक डॉ॰ तरुण कान्त ने हमारी बढ़ती आवश्यकताओं का जिक्र करते हुए पेयजल शुद्ध करने की आधुनिक तकनीकों/उपकरणों के प्रति सावधानी बरतने तथा इनका उपयोग सचेत होकर करने का आहवान किया |

श्री ए०के० सिन्हा ने कहा कि हम अपनी आवश्यकताओं को दिन-ब-दिन बढ़ाये जा रहे हैं| खास कर ऊर्जा, पानी इत्यादि को कई चीजों को हमें पुनर्चक्रित (recycle) भी करना चाहिए ताकि वे व्यर्थ होने से बचे|

स्वयं सेवी संस्था के श्री प्रसन्नपुरी गोस्वामी ने वर्षा जल संग्रहण की परंपरागत विधियों का जिक्र करते हुए पानी के प्रति सोच को बदलने का आहवान किया|

वनपाल प्रशिक्षणार्थी श्री भैरवेन्द्र सिंह ने पेयजल शुद्ध करने की आधुनिक तकनीकों से होने वाले कुप्रभाव के प्रति सचेत करते हुए पुनर्प्रयोग, घटाना, पुनर्चक्रित (reuse, reduce and recycle) करने का आहवान किया| श्री गणेश राम प्रजापति ने परिवहन ऊर्जा बचाने तथा प्लास्टिक के दुरुपयोग को रोकने जैसी चीजों का जिक्र करते हुए पृथ्वी को बचाने का आहवान किया|

कार्यक्रम के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एव विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमा राम चौधरी, भा०व०से० ने पृथ्वी दिवस मनाने की पृष्ठभूमि एवं इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला तथा इस वर्ष के विषय "पर्यावरणीय एवं जलवायु साक्षरता" की आवश्यकता बताते हुए इस हेतु आफरी द्वारा किए जाने वाले प्रयासों का जिक्र किया|

इससे पूर्व पर्यावरण प्रेमी प्रदीप शर्मा द्वारा आफरी पौधशाला परिसर में पक्षियों के लिए परिंडे लगवाए गये| पौधशाला परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में निदेशक आफरी श्री एन०के०वासु, रेलवे के वरिष्ठ अनुभाग इंजीनियर श्री पी.एस.पांडे के साथ आफरी के अधिकारी/ वैज्ञानिक/शोधार्थी/कार्मिक भी उपस्थित रहे|

3. "अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस" (22 मई 2017)

22 मई, 2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में "अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस" मनाया गया | कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों/शोधार्थियों सहित वन विभाग के अधिकारियों/ कार्मिकों आदि ने भाग लिया |

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक श्री एन.के.वासु, भा॰व॰से॰ ने अपने संबोधन में जैव विविधता को संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र के संदर्भ में समझने का आह्वान किया तथा बताया कि प्रजातियों के साथ-साथ छोटी-मोटी चीजें भी जुड़ी होती हैं | उन्होंने नेशनल पार्क/अभयारण्यों में पारिस्थितिकी पर्यटन का जिक्र करते हुए बताया कि इन पारिस्थितिकीय पर्यटन स्थलों पर पड़ते दबाव के मद्देनजर हमें जिम्मेदाराना पर्यटन लाना होगा जो सतत भी रह सके और वहाँ की जैव विविधता को भी संरक्षित रख सके| श्री वासु ने बताया कि नेशनल पार्क/अभयारण्य/अथवा अन्य पारिस्थितिकी पर्यटन क्षेत्रों के आस-पास रहने वाले स्थानीय लोगों के लिए पारिस्थितिकी पर्यटन एक अच्छा रोजगार का जरिया हो सकता है लेकिन इसके लिए उस क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र की जैव विविधता को बचाना होगा ताकि यह पर्यटन सतत बना रहे | श्री वासु ने कहा कि जैव विविधता का संरक्षण हमारी परम्पराओं और मान्यताओं में विद्यमान था लेकिन हम इन्हें भूलते जा रहे हैं इसलिए जैव विविधता संरक्षण की आवश्यकता पड़ी | श्री वासु ने सी.बी.डी. (C.B.D) सहित विभिन्न प्रक्रियाओं/ कदमों की व्याख्या करते हुए कहा कि जैव विविधता एक संवेदनशील विषय हैं, विज्ञान से जुड़ें हम लोगों को इस संबंध में अध्ययन कर इसके संरक्षण के लिए कार्य करना चाहिए |

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर श्री रघुवीर सिंह शेखावत, भा॰व॰से॰ ने जैव विविधता की व्यापकता का वर्णन करते हुए बताया कि राजस्थान में विभिन्न प्रकार के भौगोलिक भू भाग के कारण वानस्पतिक अथवा वन्य जीवन की विविध जैव विविधता मौजूद है, लेकिन विरासत में मिली इस जैव विविधता संरक्षण के लिए जन भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी । उन्होंने लोगों की सहभागिता पर ज़ोर देते हुए कहा कि जैव विविधता के जो प्रमुख स्थल हैं, इन पर फोकस कर स्थानीय लोगों की साझेदारी लेनी होगी ताकि पारिस्थितिकी पर्यट्न के माध्यम से उन्हें भी सतत रोजगार मिले | उन्होंने कहा कि इस हेतु हमें लोगों को भी जागरूक करना होगा | उन्होंने इस वर्ष के विषय की सार्थकता बताते हुए कहा कि सतत पर्यटन को जैव विविधता से जोड़ना होगा |

संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ.टी.एस. राठौड़ ने जैव विविधता की व्याख्या करते हुए इसके संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों, जैवविविधता सम्मेलन (convention of biodiversity) आदि के बारे में जानकारी कराते हुए जैव विविधता के प्रलेखन, संरक्षण एवं उपयोग (documentation, conservation & utilization) का जिक्र किया | डॉ. राठौड़ ने बताया कि भले ही कोई पौधा आज उतना उपयोगी नहीं हो, लेकिन भविष्य में इसकी कोई महत्वपूर्ण अनुसंधान परक उपयोगिता साबित हो सकती है | बढते दबाव की वजह से बहुत सारी प्रजातियाँ विलुप्तता की ओर अग्रसर हो रही हैं, जिन्हें बचाना होगा | डॉ. राठौड़ ने जहां एक और देशी प्रजातियों (indigenous sp.) के बारे में लोगों को बताने का आह्वान किया, वहीं दूसरी और आक्रमणकारी प्रजातियाँ (invasive sp.) जिनका अनुकूलन एवं पुनरुत्पादन (adoption & regeneration) बहुत मजबूत है, जो एक चिंता का विषय है, उसके बारे में सोचना होगा तथा इस क्षेत्र में कार्य भी करना होगा |

समूह समन्वयक (शोध) डॉ. आई.डी. आर्या ने बताया कि आधुनिक व्यस्तता से दूर जब हम घूमने का विचार बनाते हैं तो ऐसे स्थलों का चयन करते हैं जहां की जैव विविधता समृद्ध हो लेकिन इस तरह के जो पर्यटन स्थल हैं, वहाँ गंदगी के फैलने से जैव

विविधता का ह्रास होता हैं तथा एक चीज के खत्म होने के परिणाम-स्वरूप उसका असर कई चीजों पर पड़ता है । डॉ. आर्या ने कहा कि हम जैसे विज्ञान के क्षेत्र से आने वाले लोगों को भी इस बारे में सोचना होगा तथा लोगों में जागरूकता भी लानी होगी कि किस तरह हम इन पर्यटन स्थलों का रख रखाव करें ताकि हमारी जैव विविधता का संरक्षण हो, हमारा अनुसंधान जैव-विविधता संरक्षण से जुड़ा हुआ है, हमें इस हेतु और भी प्रयासरत रहना होगा |

वैज्ञानिक डॉ. रंजना आर्या ने कच्छ के रण का उदाहरण देते हुए आह्वान किया कि हमारे सामने चुनौतियां हैं लेकिन हमें क्षारीय पारिस्थितिकी तंत्र जैसे स्थल, जिनमें बहुत संभावनाएं (Potential) हैं, इस तरह की बंजर भूमियों को पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए तैयार करना चाहिये |

उप वन संरक्षक जोधपुर श्री हनुमाना राम, भा०व०से० ने जीव जंतुओं द्वारा फसलों के परागण (Pollination) का उदाहरण देते हुए बताया कि इस जगत में छोटे से छोटे जीव का अहम योगदान, मनुष्य भी प्राकृतिक जैव विविधता से सीखता रहता है, अत: जैव विविधता का जितना संरक्षण करें, विकास करें, तो वो बेहतर होगा ।

उप वन संरक्षक श्री महेंद्र सिंह राठौड़ ने माचिया जैव उद्यान की पर्यटन संभाव्यता (Potential) एवं उसको साफ सुथरा रखने की महत्ता का जिक्र करते हुए बताया कि किस तरह पर्यटन उद्योग लोगों के रोजगार का जरिया बनता है तथा इसमें स्थानीय जैव विविधता और भू-परिदृश्य की बहुत बड़ी भूमिका है। श्री राठौड़ ने कहा कि इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि इन पर्यटन के भू-परिदृश्यों का अति दोहन न हो । इनके प्राकृतिक सौंदर्य को संरक्षित रखें तथा इन पर्यटन स्थलों का न केवल अच्छी तरह रखरखाव हो बल्कि इन्हें और अच्छा बनाएँ |

इससे पूर्व कार्यक्रम के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमा राम चौधरी, भा०व०से० ने अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के महत्व एव प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला तथा इस वर्ष के विषय “जैव विविधता एवं सतत पर्यटन'' के बारे में बताया | श्री चौधरी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए जैव विविधता संरक्षण के विभिन्न आयामों की चर्चा की |

वैज्ञानिक डॉ. यू.के.तोमर ने बढ़ती हुई जरूरतों के कारण जैव विविधता पर पड़ते दबाव का जिक्र करते हुए बताया कि किसी भी प्रजाति के लुप्त हो जाने से सम्पूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को पुनः व्यवस्थित होना होता है | डॉ. तोमर ने विभिन्न प्रकार की जैव विविधता की व्याख्या करते हुए बताया कि प्रजाति के खत्म होने से उसके साथ की जेनेटिक विविधता भी चली जाती है। अत: हमें जैव विविधता का संरक्षण करना चाहिए तथा इस हेतु अनुसंधान का योगदान (input) देने की कोशिश करनी चाहिये |

वैज्ञानिक डॉ. तरुण कान्त ने जैव विविधता दिवस 2017 के विषय ''जैव विविधता एवं सतत पर्यटन" पर चर्चा करते हुए बताया कि पर्यट्न आधुनिक युग का एक पहलू है लेकिन हमें इस हेतु उस स्थान की जैव विविधता को भी बचाना होगा ताकि हमारा पर्यटन सतत चलता रहे, हमें पर्यटन स्थलों की स्वच्छता का भी ध्यान रखना होगा इसके लिए हमें स्वयं में परिवर्तन लाना होगा, न केवल हमें इस ओर ध्यान देना होगा बल्कि हमें हमारी ज़िम्मेदारी भी निभानी होगी | डॉ. कान्त ने ऊर्ध्वाधर बागवानी, हरित इमारतें, सकल,शून्य ऊर्जा-परिणाम वाली इमारत (vertical gardening green building Net Zero building) का जिक्र करते हुए बताया कि हमें आवास निर्माण करते समय हरित निवेश (green input) की परिकल्पना साथ रखनी होगी | डॉ कान्त ने कहा कि तकनीक हमारी ज़िंदगी का हिस्सा बन चुकी है, लेकिन हमें तकनीक के साथ चलते हुए जैव विविधता को भी बचाना होगा |

कार्यक्रम के आयोजन की व्यवस्था कृषि वानिकी प्रभाग की वैज्ञानिक- "डी" श्रीमती भावना शर्मा ने की | कार्यक्रम आयोजन में श्री रतना राम लोहरा, अनुसंधान सहायक – प्रथम, श्रीमती मीता सिंह तोमर एव श्री तेजा राम का सहयोग रहा ।

4. विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून 2017)

दिनांक 05/06/17 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के सभागार में ''विश्व पर्यावरण दिवस'' आफरी एवं वन विभाग, जोधपुर के संयुक्त तत्वाधान में मनाया गया जिसमें शुष्क वन अनुसंधान संस्थान के अधिकारियों/ वैज्ञानिकों/ शोधार्थियों, वन विभाग के अधिकारियों/ कार्मिकों सहित पर्यावरण प्रेमियों ने भाग लिया। इस अवसर पर पर्यावरण तथा इस बार के विषय ''लोगों को प्रकृति से जोड़ना'' – ''Connecting People to Nature'' पर वक्ताओं ने अपने-अपने विचार रखे।

आफरी निदेशक श्री एन.के.वासु, भा.व.से. ने पर्यावरण दिवस मनाने तथा पर्यावरण विषय से संबन्धित हुए अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों एवं सम्मेलनों (conventions) का विस्तृत विवरण देते हुए बताया कि किस तरह से विगत कुछ वर्षों में पर्यावरण से संबन्धित जो बदलाव आया है, इसके लिए हम में से हर एक को चिंतन करना होगा ताकि एक संतुलन बना रहे और पर्यावरणीय कुप्रभाव से मुक्त वातावरण मिल सके। श्री वासु ने पर्यावरण संबंधी क़ानूनों का जिक्र करते हुए बताया कि हमारा ये दायित्व बनता है कि हम वन, जल, वन्य जीव जैसे पर्यावरणीय घटकों का संरक्षण करें ।श्री वासु ने बताया कि

पर्यावरण संरक्षण की हमारी संस्कृति रही है, परंतु पिछले कुछ वर्षों में बदलाव आया है । श्री वासु ने कहा कि पर्यावरण पर विचार-विमर्श के साथ-साथ हमें स्वयं में इसके प्रति संवेदनशील (compassion) होना चाहिए। श्री वासु ने कहा कि सुविधाओं का उपयोग हो, लेकिन ऐसा कार्य न करें कि इसके पर्यावरणीय कुप्रभाव औरों को भुगतने पड़ें, हमें न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामूहिक दायित्व भी निभाना होगा। श्री वासु ने मरुस्थल का उदाहरण देते हुए बताया कि पहले की जीवन प्रणाली में मुश्किलें थी पर जीवन बड़ा सुखी था, लोग खुश थे। श्री वासु ने अब से कुछ वर्षो पहले किस तरह से बेझिझक खाद्य पदार्थों को उपयोग कर लेने का जिक्र करते हुए बताया कि आज तमाम रासायनिक चीजों/ कृत्रिम उपायों के अंदेशे में इन खाद्य पदार्थो के इस्तेमाल में हमें शंकाएँ उत्पन्न होती हैं, हमें इस तरह के जो पर्यावरणीय विकार उत्पन्न हुए हैं, उन्हें दूर करना है। श्री वासु ने विभिन्न संस्थाओं तथा पर्यावरण प्रेमियों द्वारा पर्यावरण के लिए किए गए कार्यो का जिक्र करते हुए सभी का आह्वान किया कि हम सभी इसमें किसी न किसी रूप में अपना योगदान देवें। पर्यावरण के लिए कितना अच्छा कर सकते हैं, इस पर हर व्यक्ति को सोचना होगा। पर्यावरण हेतु जो कार्य हुआ, उसको, अनुसंधान सहित, सक्षम रूप से बड़ी गुणवत्ता के साथ और आगे बढ़ाना है। श्री वासु ने वाहनों के कम उपयोग से वायु प्रदूषण कम करने (साइकिल या पैदल चल कर अथवा वाहन पूल कर), अपने आस-पास में हर व्यक्ति द्वारा पौधारोपण, अपने आस-पास के क्षेत्र को प्लास्टिक मुक्त तथा कचरा मुक्त रखने तथा फलों इत्यादि के बीजों को सही जगह डालकर वृक्ष पनपाने में योगदान जैसे सुझावों पर कार्य करने का भी आह्वान किया ताकि सही मायने में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कुछ योगदान हो सके।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रघुवीर सिंह शेखावत, भा.व.से., मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण की हमारी संस्कृति रही है तथा जल, वृक्ष एवं इनके जीवन से रिश्ते पर ज़ोर रहा है एवं जल संरक्षण की महत्ता रही है, लेकिन पर्यावरण से हमारे रिश्ते का कहीं धीरे-धीरे से ह्वास हुआ है, हम जिस तरह से पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं, इसकी भरपाई के लिए वृक्षारोपण, प्रदूषण कम करना, पॉलीथीन से प्रदूषणीय प्रभाव को रोकने जैसे कार्य कर हम व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से अपना उत्तरदायित्व निभा सकते हैं। जहां एक ओर व्यक्तिगत रूप से अपने आस-पास के लोगों में पर्यावरण के प्रति सजगता पैदा की जा सकती है तथा विभाग और संस्थाएं हैं, सामूहिक रूप से पर्यावरण संरक्षण का कार्य कर सकते हैं। वृक्ष जो पर्यावरण का महत्वपूर्ण घटक हैं, इसके लिए तथा धरती पर हरीतिमा लाने के लिए लोगों को भी जोड़ना होगा। श्री शेखावत ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी से जो संपर्क (connectivity) बढ़ा है उससे भी पर्यावरण संरक्षण में सकारात्मक भूमिका बढ़ायी जा सकती है। श्री शेखावत ने कहा कि व्यक्तिगत एवं संस्थानिक रूप से पर्यावरण संरक्षण हेतु क्रमशः एकल एवं सामूहिक प्रयासों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इस दिशा में बहुत सामाजिक बदलाव लाया जा सकता है। श्री शेखावत ने रेगिस्तान की अलग तरह की वनस्पति और यहाँ पानी की अलग प्रकार से भूमिका का जिक्र करते हुए बताया कि यदि हमें प्राकृतिक वृक्षों जैसे खेजड़ी, रोहिडा, जाल, नीम आदि को संरक्षित करके इस भू-भाग को हरा करना है, यदि वृक्षों का आच्छादन बढ़ता है, तो इससे प्रदूषण एवं भूमंडलीय तापमान में वृद्धि जैसी समस्याओं का निदान संभव है। श्री शेखावत ने वर्षा जल संग्रहण की आवश्यकता बताते हुए कहा कि प्रदूषित जल को ऐसे स्त्रोतों में जाने से बचाना चाहिए जहां से पीने के पानी की सप्लाई होती है। श्री शेखावत ने कहा कि यदि हम हमारे आस-पास के परिवेश को स्वच्छ रखेंगे तो इससे अच्छा संदेश फैलेगा। श्री शेखावत ने कहा कि यदि पर्यावरण संरक्षण के छोटे छोटे व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयास करें तो सही मायने में इस दिवस के विषय ''प्रकृति से लोगों का जुड़ाव'' को प्राप्त कर पाएंगे तथा भावी पीढ़ियों के लिए हमारे पर्यावरण को संरक्षित रख पाएंगे। श्री शेखावत ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण का जो हमारा व्यक्तिगत और सामाजिक दायित्व है उसका निर्वहन करते हुए पर्यावरण संरक्षण की चुनौती का सामना करते हुए अच्छा कार्य करने का प्रयास करेंगे।

भारतीय वन सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी, श्री एम.एल.सोनल ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण का विषय बड़ा मार्मिक है, जो संस्कार हमें मिलते हैं, उनका भी निचोड़ यही है कि चीजों का उपभोग चाहे वह खाद्य सामग्री हो या पानी, आवश्यकतानुसार हो तथा सदुपयोग होना चाहिए । समय बदल रहा है, यदि हम ढंग से नहीं चले तो पर्यावरण की चोट कभी भी लग सकती है । श्री सोनल ने इस वर्ष के विषय, ''लोगों को प्रकृति से जोड़ना'' की चर्चा करते हुए बताया कि पर्यावरणीय मुद्दे जो कि समय, जगह, स्थान विशेष की परिस्थितियों के अनुकूल अलग-अलग होते हैं, उनके बारे में आम लोगों में जानकारी (awareness) फैलाई जाए तथा उन्हें पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रेरित (motivate) करें, ताकि जल, हवा, ईंधन आदि का संरक्षण हो ताकि पर्यावरण का संरक्षण हो सके। श्री सोनल ने आवासीय क्षेत्रों के आस-पास कचरा सफाई के उदाहरण देते हुए बताया कि इसी तरह के पर्यावरणीय पहलुओं पर कार्य कर यदि हम स्वयं इसके उदाहरण बनें तो औरों को भी इन पर्यावरण संरक्षण के कार्यों हेतु प्रेरित (motivate) कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि पर्यावरण का ज्ञान पूरे उत्साह एवं ऊर्जा के साथ

औरों तक भी पहुचे, लोगों का इस ओर जुड़ाव हो जिससे पर्यावरण का संरक्षण हो ताकि हम आने वाली पीढ़ियों को भी एक अच्छा पर्यावरण हस्तांतरित कर सकें।

समूह समन्वयक (शोध) डॉ. आई.डी.आर्या ने हमारे गृह (planet) को प्राकृतिक रूप में बचा कर भावी पीढ़ियों को हस्तांतरित करने के उद्देश्य से शुरू किए गए पर्यावरण संरक्षण के आंदोलन की भूमिका बताते हुए इस आंदोलन को ओर आगे बढ़ाने तथा इसके प्रति जन चेतना जागृत करने के लिए इस तरह के आयोजन, रैली, संगोष्ठी आदि की आवश्यकता बताई, तथा कहा कि बड़ा अजीब लगता था जब हम बोतलों में पानी की खरीद के बारे में सुनते थे, कहीं ऐसा न हो कि प्रदूषण के कारण शुद्ध हवा के लिए भी यही चीज़ हकीकत न बन जाए, इसके लिए आवश्यक है कि प्रकृति से जोड़ने जैसे विषय पर काम करना जरूरी है जैसे आज सवेरे विद्यार्थी जब नेचर वॉक में सम्मलित हुए तो उन्हें पेड़ों के बारे में नयी-नयी जानकारी मिली। डॉ. आर्या ने कहा कि हमारे अनुसंधान का भी रुख इस तरह मोड़ें कि पर्यावरण की सुरक्षा हो जैसे कि पेट्रोल डीजल जैसे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले ईंधन की जगह सौर-ऊर्जा एवं पन बिजली जैसी तकनीकों पर काफी कार्य हो रहा है। इसी तरह हमें अनुसंधान से जुड़े वैज्ञानिकों को यह कोशिश करनी चाहिए कि पर्यावरण को बचाने के लिए क्या कदम उठा सकते हैं। डॉ. आर्या ने अनुरोध किया कि हमारे आस-पास के क्षेत्र यथा सार्वजनिक पार्क या सामुदायिक केन्द्रों पर पौधारोपण कर भी पर्यावरण को संरक्षित करने में योगदान कर सकते हैं ।

संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने सरल शब्दों में पर्यावरण का मतलब बताया कि हमारे चारों तरफ उपस्थित जैविक और अजैविक चीजें ही पर्यावरण हैं, जिनके संरक्षण की हमारी पुरानी परम्पराएँ हैं। डॉ. जी.सिंह ने कहा कि हमारी धारणाएँ पहले से ही प्रकृति के प्रति समर्पित रही हैं, हमें इन्ही परम्पराओं को और मजबूत करने तथा आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। डॉ. सिंह ने कहा कि कहीं हम परंपरागत पद्धतियों (Traditional System) के बजाय औद्योगीकरण तथा आधुनिकीकरण के चक्कर में इनके ऋणात्मक प्रभाव को नज़रअंदाज़ करते हुए इसी भागदौड़ में तो नहीं लगे हुए हैं, जिससे पर्यावरण प्रदूषित हुआ है। डॉ. सिंह ने हमारी इन्हीं परम्पराओं को आगे बढ़ाने पर ज़ोर देते हुए प्रतिवर्ष वृक्षारोपण जैसे कार्य करने का सुझाव दिया।

उप वन संरक्षक, जोधपुर, श्री हनुमाना राम, भा.व.से. ने बताया कि पर्यावरण की समस्या पूरे संसार की है और पूरी दुनिया में इस प्रकार के आयोजन और इस पर मंथन हो रहा है कि इस समस्या का मुक़ाबला कैसे करें । उन्होंने कहा कि हमारी सुविधाभोगी जीवन पद्धती के चलते हमें सुविधाएं आगे भी निरंतर मिलती रहें, ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा है । पर्यावरण को हो रहे नुकसान को बचाने के लिए हमारी दैनिक दिनचर्या और जीवन पद्धती को बदलना होगा। उन्होंने बताया कि जीवन को जितना सरल बनाओगे पर्यावरण का उतना ही भला होगा। उन्होंने कहा कि धरती तभी सुंदर बनेगी, जब इस पर पेड़ पौधे होंगे, पर्यावरण संरक्षण के लिए न केवल बच्चों बल्कि अपने आस-पास के लोगों को भी बताना पड़ेगा, अपना जो भी कार्यक्षेत्र है, उसमें अपना दृष्टिकोण सकारात्मक रखें, पर्यावरण का संरक्षण करें ।

उप वन संरक्षक (वन्य जीव) जोधपुर, श्री महेंद्र सिंह राठौड़ ने विश्व पर्यावरण दिवस के इस मौके पर सभी से अनुरोध किया कि इस पर्यावरण को बचाने के लिए अपना जैसा भी, जितना भी योगदान हो करें तथा इस पर्यावरण को स्वच्छ व सुंदर रखें और बचाएं, एवं जो कुछ खराब हो चुका है उसको पुनःस्थापित (restore) करने में अपना योगदान दें। श्री राठौड़ ने माचिया जैविक उद्यान का उदाहरण देते हुए बताया कि वहाँ जो पौधरोपण किया गया है, उसके अतिरिक्त प्राकृतिक रूप से बीजों द्वारा नीम, पीपल, बबूल भी उग रहे हैं, कुमट भी प्राकृतिक रूप से आया है। उन्होंने सुझाया कि पेड़ पौधों के या कोई भी फलों के बीज हैं वो हम इकट्ठे कर लें और अपने साथ जहां कहीं भी बाहर जाएँ तो वहाँ उनको डालें, संभावना है कि वे वर्षा ऋतु में उग कर पेड़ का रूप ले लें और इस तरह अगर एक भी बीज पेड़ बनता है तो इससे पर्यावरण को बहुत योगदान होगा। श्री राठौड़ ने प्रत्येक से आह्वान किया कि हम घर-घर से कचरा संग्रहण जैसे कार्यों के माध्यम से अपने शहर को स्वच्छ और हरा भरा रखें तो भी पर्यावरण संरक्षण का अच्छा प्रयास होगा। श्री राठौड़ ने कहा कि हमें दूसरे के कार्यों और अनुभव से सीख कर पर्यावरण संरक्षण के कार्यों को आगे बढ़ाना चाहिए।

वैज्ञानिक डॉ. यू.के.तोमर ने कहा कि हम पुराने समय से ही प्रकृति से जुड़े हैं लेकिन ज्यों ज्यों वैज्ञानिक प्रगति हुई, जीवन में सुविधाएं बढ़ी, परंतु इस विकास के साथ-साथ दुष्प्रभाव भी हुए हैं जिन पर हमें नज़र डालनी चाहिए। डॉ. तोमर ने बताया कि हमारे प्राकृतिक संसाधन जैसे वन, पानी इत्यादि इनका हमें सावधानी से उपयोग करना चाहिए तथा पौधारोपण करने तथा पानी बचाने जैसी छोटी छोटी चीजों पर ध्यान देकर उन्हें भविष्य के लिए भी संरक्षित रखना चाहिए इन पर हमें व्यक्तिगत स्तर पर ध्यान देने की जरूरत है।

वैज्ञानिक डॉ. तरुण कान्त ने पर्यावरण दिवस की महत्ता का जिक्र किया तथा बताया कि इस तरह के दिवस हमें पर्यावरण के प्रति सचेत करते हैं और इनके संरक्षण के लिए सकारात्मक भावना पैदा करते हैं। डॉ. कान्त ने बताया कि पर्यावरणीय चर्चा के दौरान तीन R की बात बार- बार की जाती हैं, कम करना, पुनःउपयोग एवं पुनःचक्रण (Reduce, Reuse एवं Recycle) लेकिन अब हमें 2 R और जोड़ देने चाहिए और वे हैं नवीनीकरण एवं इन्कार (Renew एवं Refuse). Renew माने हम सौर ऊर्जा जैसे अक्षय संसाधनों (renewable resources) की तरफ जाएँ तथा इन्कार (Refuse) का मतलब पर्यावरण को नुकसान पहुँचने वाली चीजों जैसे प्लास्टिक का उपयोग हम मजबूती से इनके उपयोग से बचें (avoid), इन्हें इन्कार (refuse) करें। पर्यावरण दिवस 2017 के विषय से जुडने के लिए डॉ. कान्त ने साइकिल चलाने एवं किचन गार्डन जैसे सरल उपायों का जिक्र कर प्रकृति से जुडने का आहवान किया।

वैज्ञानिक ए.के.सिन्हा (प्रभारी सूचना प्रौद्यौगिकी) ने बताया कि सूचना तकनीक जैसी आधुनिक तकनीकों के बिना काम चलना, रहना शायद संभव नहीं है, परंतु इनका कम से कम और सही उपयोग करें, इस दिशा में सोचा जाना चाहिए। श्री सिन्हा ने कहा कि वाहनों आदि से निकलने वाले ध्वनि प्रदूषण का हमारे पौधों, हमारे वातावरण एवं परिणाम-स्वरूप हमारी सेहत पर क्या असर पड़ता है, इस पर अध्ययन किया जाना चाहिए तथा हमें स्वयं भी यह प्रयास करना चाहिए कि वाहन आदि से कम से कम ध्वनि प्रदूषण फैलाएँ। श्री सिन्हा ने आगाह किया कि समस्या और बढ़ने वाली है, अतः इस पर हमें अभी से सोचना चाहिए।

वन विभाग के क्षेत्रीय वन अधिकारी श्री पुष्पेंद्र सिंह ने कहा कि आज पर्यावरणीय नुकसान की चिंता हम लोग कर रहें हैं, लेकिन मात्र चिंता करने से कुछ नहीं होगा हमें इसमें सुधार हेतु व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर प्रतिबद्ध (commited) होना होगा, जहां एक ओर व्यक्तिगत प्रतिबद्धता (indivisual commitment) से मन को मजबूती मिलेगी और आप उस दिशा में आगे बढ़ सकेंगे, वहीं सामूहिक प्रतिवद्धता (collective commitment) से परिणाम मिलेंगे । उन्होंने इसी क्रम में सामूहिक प्रयास से कार्यक्षेत्र / आवासीय स्थल / परिसर को पॉलीथीन मुक्त क्षेत्र बनाने का आह्वान किया।

श्रीमती विमला सिहाग ने ऑक्सीज़न की आवश्यकता और भविष्य में इस बाबत हो सकने वाली कठिनाई के प्रति सचेत करते हुए, पेड़ लगाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। पेड़ न केवल हमें ऑक्सीज़न देते हैं बल्कि फूल, पत्ते, लकड़ी, फल सभी कुछ देते हैं। पेड़ से हम भी सीख लें, पेड़ की तरह बनें तथा इसकी तरह हम भी औरों के लिए कुछ करें। पेड़ लगाने से स्वयं को तो फायदा होगा, औरों को भी मिलेगा।

पर्यावरण प्रेमी श्री प्रदीप शर्मा ने वृक्षों की महिमा एवं वृक्षारोपण के भावों से ओतप्रोत गीत सुनाया।

पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर रही सुश्री यशस्वी सोनी ने दिनांक 4-6-17 को आफरी द्वारा आयोजित नेचर वॉक (Nature Walk) के बारे में बताया कि इससे हमें काफी जानकारी मिली। नए-नए पौधे देखे, नयी-नयी चीजें सीखी जैसे कि पेड़ों से औषधियाँ भी प्राप्त होती है वगैरह-वगैरह। सुश्री सोनी ने बताया कि आज के कार्यक्रम में पूर्व में सुने 3R – Reduce, Recycle and Reuse (कम करना, पुनःउपयोग एवं पुनःचक्रण) के अलावा आज दो और R – Renew और Refuse (नवीनीकरण एवं प्रतिषेध के बारे में सुना तथा इसी तरह की कई बातें सुनी लेकिन यदि हम इन्हें अपने जीवन में क्रियान्वित नहीं करेंगे तो ये कुछ काम के नहीं। सुश्री सोनी ने सभी का आह्वान किया कि अगर यहाँ से जाने के बाद में एक छोटा सा कदम भी उठा लें तो प्रकृति के संरक्षण की दिशा में बहुत बड़ा काम होगा। सुश्री सोनी ने बताया कि आज की ज़िंदगी व्यस्त है लेकिन यदि हम प्राकृतिक चीजों को अपनाकर, पेड़ पौधों जैसी प्रकृति प्रदत्त चीजों का संरक्षण कर उन्हें आगे बढ़ाएँगे तो आने वाली पीढ़ियों को भी प्राकृतिक चीजें मिल पाएँगी। सुश्री सोनी ने कहा कि यदि बड़े, प्रकृति संरक्षण के अच्छे कार्य करेंगे, तो बच्चे भी उनका अनुकरण करेंगे। उन्होंने पर्यावरण दिवस के कार्यक्रम के लिए धन्यवाद देते हुए बताया कि बच्चों के लिये ये बहुत अच्छा रहा और हमने बहुत सारी चीजें सीखी।

इससे पूर्व कार्यक्रम के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष, श्री उमाराम चौधरी ने विश्व पर्यावरण दिवस की महत्ता एवं इसकी प्रासंगिकता तथा इस दिवस की विषय वस्तु की जानकारी दी। श्री चौधरी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए इस उपलक्ष्य में आयोजित अन्य गतिविधियो एवं पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं की चर्चा की।

कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग की वैज्ञानिक ''डी'' श्रीमती भावना शर्मा ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम आयोजन की व्यवस्था आफरी की तरफ से वैज्ञानिक –डी श्रीमती भावना शर्मा ने की जिसमें ''वैज्ञानिक – बी'' डॉ. बिलास सिंह , श्री रतनाराम लोहरा, अनुसंधान सहायक-प्रथम, श्री महिपाल विश्नोई, अनुसंधान सहायक – द्वितीय, श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक तथा श्री तेजाराम का महती योगदान रहा।

नेचर वॉक का आयोजन

''पर्यावरण दिवस'' 2017 के उपलक्ष्य में दिनांक 4/6/17 को वन विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आफरी की प्रायोगिक पौधशाला परिसर में ''Nature Walk'' का भी आयोजन किया गया। जिसमें स्कूलों के विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों, आफरी के वैज्ञानिक/ अधिकारी/ शोधार्थियों, वन विभाग के कार्मिकों एवं पर्यावरण प्रेमियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आफरी के निदेशक श्री एन.के.वासु ने नेचर वॉक के प्रतिभागियों को वानस्पतिक प्रजातियों के बारे में जानकारियाँ दी।

आफरी के पूर्व निदेशक एवं सेवानिवृत वैज्ञानिक, डॉ. टी.एस.राठौड़ ने पर्यावरणीय मुद्दे जैसे हवा एवं जल का प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन तथा इससे होने वाले प्रभाव, भू-जल स्तर का कम होना, फसल चक्र में परिवर्तन, पानी एवं बिजली क्यों बचाएं, स्वच्छता इत्यादि के बारे में चर्चा करते हुए अलग-अलग तरह के पादप एवं जन्तु, यानि जैव-विविधता, जो कि हमारे जीवन के लिए बहुत जरूरी है, के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि किसी प्रजाति का आज हमें उपयोग पता नहीं है, लेकिन हो सकता है कि भविष्य में उसकी बहुत उपयोगिता साबित हो, कई प्रजातियाँ लुप्त होने के कगार पर हैं, अतः हमें इस जैव-विविधता को बचाना है।

केंद्रीय भू-जल बोर्ड के वैज्ञानिक डॉ. रामकिशन चौधरी ने बताया कि पर्यावरण का महत्वपूर्ण घटक जल है, लेकिन हमने अपने पूर्वजों के द्वारा छोड़े गए जल भंडारों का अति दोहन कर लिया है, जिसके कारण आज रोजगार के लिए बाहर जाना पड़ रहा है। डॉ. चौधरी ने प्रकृति प्रदत्त जल चक्र की जानकारी देते हुए बताया कि कुदरत सबसे बढ़िया व्यवस्थापक है लेकिन हमारे गलत जल प्रबंधन के कारण आज स्वच्छ जल उपलब्धता होना एक बड़ी समस्या बन गयी है। उन्होंने जल बचाने का आहवान करते हुए कहा कि ''जल है, तो कल है''।

कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी ने नेचर वॉक (Nature walk) के प्रतिभागियों को नर्सरी परिसर का भ्रमण करवाते हुए, जैविक खाद, कंपोस्टिंग, विभिन्न प्रकार की वृक्ष प्रजातियों जैसे जंगल जलेबी, बांस, कंकेड़ा, गूँदा, इमली, निर्गुंडी, बेलपत्र, खेर, ढाक, सेमल, मोलसरी, अर्जुन, हरड़, बहेड़ा, कुटज, टेंट (सोनाक) (ओरोजायलम इंडिकम), सहजना, पुत्रंजीवा, हवन, शीशम, गुग्गल, लेमनग्रास, औषधीय पौधे जैसे शतावरी, गुडमार, वज्रदंती, सर्पगंधा, मरवा, पनीरबन्ध, फालसा, चन्दन, लालचंदन, कल्पवृक्ष, आदि प्रजातियों के बारे में जानकारी दी जिसमें नर्सरी प्रभारी, श्री सादुलराम देवड़ा का भी सहयोग रहा।

पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में चित्रकला प्रतियोगिता

दिनांक 4/6/17 को ही वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में स्कूली विद्यार्थियों के लिए ''मानव एवं प्रकृति'' विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गयी, जिसमें स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। सभी विजेताओं को विश्व पर्यावरण दिवस (5/6/17) को पुरस्कार वितरित किए गए। चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को भी प्रमाण पत्र वितरित किए गए। चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता के नाम इस प्रकार हैं -

1.एम. गोपाल कृष्ण पुत्र श्री मनोरंजन भूयन – डी.पी.एस, पाली रोड, जोधपुर
2. यशस्वी सोनी पुत्री श्री महेश कट्टा – एस.पी.एस. स्कूल , जोधपुर
3. प्रिंस चौधरी पुत्र श्री रणवीर चौधरी – महेश पब्लिक स्कूल, जोधपुर
4. पलाक्षी व्यास पुत्री श्री अनिल व्यास – सेंट्रल अकेडमी, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

फोटोग्राफी एवं नारा प्रतियोगिता हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

इससे पूर्व दिनांक 17 मई 2017 तक चार विभिन्न विषयों पर फोटोग्राफी प्रतियोगिता हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गयी, जिसमें से सर्वश्रेष्ठ 5 प्रविष्टियों को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून भेजा गया। इसी तरह दिनांक 17 मई 2017 तक स्लोगन (नारा लेखन) प्रतियोगिता हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गयी, जिसमें से सर्वश्रेष्ठ 5 प्रविष्टियों को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून भेजा गया।

5. मरू प्रसार रोक दिवस (17/6/2017)

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर एव वन विभाग जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में 17 जून , 2017 को विश्व मरू प्रसार रोक दिवस मनाया गया | इस अवसर पर वन भवन परिसर जोधपुर में पौधरोपण किया गया, जिसमें शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के अधिकारियों/वैज्ञानिको/शोधार्थियों/कार्मिकों, वन विभाग के अधिकारियों /कार्मिकों मरु वन प्रशिक्षण केंद्र, जोधपुर के वनपाल प्रशिक्षणार्थियों, पर्यावरण प्रेमी श्री प्रसन्नपुरी गोस्वामी सहित बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया । पौधरोपण का शुभारंभ आफरी निदेशक श्री एन.के.वासु, भा॰व॰से॰ एवं श्री रघुवीर सिंह शेखावत, भा॰व॰से॰ , मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर ने नीम के पौधों का रोपण कर किया ।

पौधरोपण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री एन.के.वासु, भा॰व॰से॰ निदेशक आफरी ने वृक्षारोपण द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का जिक्र करते हुए बताया कि किस तरह मरुस्थल में किए गये पौधरोपण से मरुस्थलीय विकट परिस्थितियों में सुधार हुआ है लेकिन हमें किए गए कार्य को लेखनी बद्ध भी करते रहना चाहिए | श्री वासु ने कहा कि मरुस्थलीय पारिस्थितिकी का भी संरक्षण करना है इसलिए हमें विज्ञान का भी सहारा लेना चाहिए |श्री वासु ने मरुस्थलीय पारिस्थितिकी के संरक्षण की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए बताया कि हमें इस हेतु विज्ञान का सहारा लेना चाहिये तथा मरुस्थल को हम ऐसे रूप में ले जाएँ जिसमें वैज्ञानिक रूप से भी ऐसा लगे कि वाकई मरुस्थल में ऐसी कोई चीज़ नहीं हो रही है जिसका नकारात्मक प्रभाव पड़े |

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री रघुवीर सिंह शेखावत, भा॰व॰से॰, मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर ने बताया कि वृक्ष सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हैं, जो मरु स्थल को स्थायी रूप से रोकने एवं आगे प्रसार होने से रोक सकता है | श्री शेखावत ने मरुस्थलीय महत्वपूर्ण जैव विविधता को मरु पारिस्थितिकी तंत्र की जीवन रेखा बताते हुए कहा कि इस क्षेत्र की अत्यधिक तापमान एवं कम बारिश जैसी कठिन परिस्थितियों के मदद्देनजर आने वाली चुनौतियों के बावजूद इसमें कार्य करना है ।

इस अवसर पर आफरी के सभागार में विश्व मरू प्रसार रोक दिवस के उपलक्ष्य में हुए कार्यक्रम में विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए |

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री डी.पी.शर्मा, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, प्रशिक्षण, अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार, राजस्थान वन विभाग ने बताया कि मरुस्थलीय पारिस्थितिकी की अपनी अलग पहचान है तथा यह पारिस्थितिकी अपने आप में अनूठी है, यहाँ की जैव विविधता एवं पर्यावरणीय घटकों का संरक्षण हो | उन्होंने कहा कि मरु प्रसार रोक हेतु किए जाने वाले वृक्षारोपण में स्थानीय प्रजातियों को स्थान दें |

आफरी निदेशक श्री एन.के.वासु, भा॰व॰से॰ ने मरुस्थलीय पारिस्थितिक तंत्र का खाका खींचते हुए इसके विभिन्न आयामों को समझाया तथा बताया कि किस तरह से रेगिस्तानी वनस्पति यथा आक, केर, खेजड़ी में से किसी के भी नहीं फलने फूलने से वहाँ की पूरी जीव व्यवस्था कैसे अव्यवस्थित हो जाती थी लेकिन पिछले कुछ वर्षों से परिस्थितियां बदली हैं, बडे पैमाने पर वृक्षारोपण हुआ है | जिससे मरु-प्रसार पर अंकुश लगाने में मदद मिली है।

श्री वासु ने मरुस्थल प्रसार रोक हेतु हुए विभिन्न कार्यो का वहाँ के पारिस्थितिक तंत्र पर क्या परिणाम रहा, इसका वैज्ञानिक आंकलन करने की आवश्यकता बताई | श्री वासु ने पर्यावरणीय मुद्दों के जटिल विषयों को आम लोगों तक इस रूप में ले जाने की आवश्यकता बताई कि वे इन्हें समझ सकें और धरातल पर इन पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान निकल सकें | श्री वासु ने विद्यमान पारिस्थितिकी तंत्र जैसे टिब्बों में मिलने वाली नमी आदि का जिक्र करते हुए कहा कि मरुस्थल में होने वाली गतिविधियों के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी सामने रखना होगा तथा वहाँ की परिस्थितियों के अनुकूल कार्य करना होगा ताकि मरुस्थलीय जैव विविधता पर भी विपरीत असर न हो | श्री वासु ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में काम करने से पहले वहाँ की परिस्थितियों की जानकारी रखना आवश्यक है ताकि हमें पता हो कि हम क्या कर रहे हैं। अत: जिस भी क्षेत्र में हम कार्य करें, उसके बारे में उपलब्ध सूचना एवं तकनीक की जानकारी ले लेवें, इन्हें साझा करें, ताकि पारिस्थितिकीय तंत्र के अनुरूप कार्य किया जा सके । श्री वासु ने वैज्ञानिक दृष्टी से योजना तैयार (planning) करने तथा मरुस्थलीय परिस्थितियों अनुसार आदर्श प्रतिरूप (ideal model) विकसित करने की भी आवश्यकता बताई |

कार्यक्रम में श्री रघुवीर सिंह शेखावत मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर ने बताया कि रेगिस्तान का मतलब केवल रेतीले टिब्बे ही नहीं हैं बल्कि इसमें अवक्रमित पहाड़, लवणीय भूमि इत्यादि वृक्ष विहीन और वनस्पति विहीन क्षेत्र भी आते हैं | उन्होंने कहा कि विस्तारित हो रहे मरुस्थल के प्रभाव को रोकने के लिए वृक्षारोपण और हरियाली बढ़ाने के जो कार्य हुए वो इसे रोकने में मददगार साबित हुए | उन्होंने कहा कि मरुस्थलीय क्षेत्र से होने वाले पशु प्रवास में हालांकि कमी हुई है लेकिन हमें मिलकर ऐसी तकनीक का ईजाद करना है ताकि मरुस्थलीय परिस्थितियों के विपरीत प्रभाव से होने वाले प्रवास में और कमी आवे | श्री शेखावत ने इस क्षेत्र की दुर्लभ जैव विविधता के लिए अनुकूल वातावरण निर्माण करने और प्रभावी कार्यक्रम के माध्यम से मरु प्रसार को रोकने की आवश्यकता प्रतिपादित की | उन्होंने कहा कि इस हेतु अन्य विभागों सहित, आफरी जैसी संस्थाओं की तकनीकी सहायता से सभी को मिलकर इस दिशा में कार्य करना होगा |

भारतीय वन सेवा के सेवानिवृत अधिकारी श्री एम.एल.सोनल ने अपने उद्बोधन में मरुस्थल क्षेत्रों में विभिन्न योजनाओं के तहत हुए टिब्बा स्थिरीकरण, शेल्टर बेल्ट प्लांटेशन, सिलवीपेस्टोरल आदि मॉडलों के अन्तर्गत हुए वृक्षारोपण, उनसे होने वाले प्रत्यक्ष एव परोक्ष लाभों जैसे चारा उपलब्धि इत्यादि मरु प्रसार रोक के विभिन्न आयामों की विस्तृत व्याख्या करते हुए बताया कि हमें मरुस्थल की परिस्थितियों एव जलवायु के अनुसार कार्य करने होंगे, जिसमें जन सहभागीदारी भी अहम पहलू है । श्री सोनल ने बताया कि मरु प्रसार को रोकने के लिए रेगिस्तान की परिस्थितियों की गहराई समझ कर, जनसहभागिता से, स्थानीय परिस्थितियों अनुसार वृक्षारोपण जैसे कार्य कर मरु प्रसार को रोकना होगा, हमारे पर्यावरण को बचाना होगा |

सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. इमानुएल ने आधुनिकतम तकनीक से ऐसे पौधों का चयन करने पर ज़ोर दिया जो जहां हम पौधे लगा रहे हों वहाँ की परिस्थितियों में पनप सकें तथा बताया कि अवक्रमित क्षेत्रों का पुनर्वासन करने के लिए हमें उचित प्रजातियों का चयन करना पड़ेंगा |

उप वन संरक्षक जोधपुर श्री हनुमाना राम, भा॰व॰से॰ ने बताया कि मरू प्रसार का वानस्पतिक आवरण ही एक मात्र स्थायी समाधान है, अत: हमें न केवल विद्यमान पेड़ों को बचाना चाहिए, बल्कि और अधिक पेड़ लगाकर तथा विद्यमान पेड़ों के नीचे अन्य प्रजातियों की वितान (storey) तैयार कर एक मजबूत वानस्पतिक आवरण बनाना चाहिए तथा मिट्टी को मूल स्थान पर ही रोक उपजाऊ बनावें ताकि इसे अन्य जगह पर उड़ कर जमा होने से बचा सकें |

वैज्ञानिक डॉ. तरुण कान्त ने जेनेटिक अभियांत्रिकी के माध्यम से ऐसे पौधे तैयार करने का जिक्र किया जो मरुस्थल की कठिन परिस्थितियों, कम पानी, लवणीय भूमि तथा अकाल की परिस्थितियों में भी पनप सकें तथा जिनका इन क्षेत्रों में वृक्षारोपण में उपयोग हो सके। उन्होंने बताया कि मरु प्रसार को रोकने के लिए नयी तकनीक का समावेश करते हुए तकनीकों का संमिलन (convergence) करें ताकि मरु प्रसार रोक के विभिन्न पहलुओं पर प्रभावी कार्य किया जा सके |

वैज्ञानिक श्रीमती संगीता त्रिपाठी ने प्रकृति के लिए वृक्षारोपण के माध्यम से हरी चादर ओढ़ाने से संबंधित विषय पर भावपूर्ण पर्यावरणीय कविता सुनाई |

पर्यावरण प्रेमी श्री प्रसन्नपुरी गोस्वामी ने अवक्रमित पहाड़ियों पर किस तरीके से पौधे लगाए जा सकते हैं, इस हेतु अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि इस तरह के वृक्षारोपण से हरियाली आकर पहाड़ सुंदर बन जाते हैं, जलग्रहण क्षेत्र का संरक्षण होता है, जैव विविधता बढ़ती है, औषधीय पौधों को भी पनपा सकते हैं लेकिन इसके लिए कठोर परिश्रम, दृढ संकल्प, समर्पण की भावना से काम करना होगा तभी बढ़ते हुए रेगिस्तान को हम रोक सकते हैं | श्री गोस्वामी ने कहा कि पौधा लगाना और वह जब तक स्थापित न हो जावे उसका पालन पोषण करना जरूरी है । उन्होंने कहा कि स्थानीय परिस्थितियों अनुसार पनपने वाली प्रजातियों, जैसे रेगिस्तानी क्षेत्र में रेगिस्तानी प्रजातियों को लगावें |

इससे पूर्व कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्री उमा राम चौधरी, भा॰व॰से॰ प्रभागाध्यक्ष कृषि वानिकी एवं विस्तार ने मरू प्रसार रोक दिवस की महत्ता और उसकी प्रासंगिकता के बारे में बताया तथा इस वर्ष के नारे “ हमारा घर, हमारी भूमि, हमारा भविष्य” की भी चर्चा की | श्री चौधरी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए मरू प्रसार रोक, भूमि अवक्रमण एव प्रवास आदि से संबंधित विभिन्न पहलुओं की चर्चा भी की |

कार्यक्रम की आयोजन व्यवस्था श्रीमती भावना शर्मा वैज्ञानिक – "डी" कृषि वानिकी एवं विस्तार ने की | जिसमें वैज्ञानिक- "बी" डॉ. बिलास सिंह, श्री रतना राम लोहरा, अनुसंधान सहायक – प्रथम एवं श्री तेजा राम का सहयोग रहा |

वन महोत्सव

World Day to Combat Desertification - 2017
OUR LAND, OUR HOME, OUR FUTURE
17th June, 2017
ARID FOREST RESEARCH INSTITUTE,
Forest Department, Jodhpur, Rajasthan

6. वन महोत्सव (6 जुलाई 2017)

दिनांक 6/7/2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में वन महोत्सव 2017 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आफरी निदेशक श्री एन.के.वासु, भा॰व॰से॰ ने सभी का वन महोत्सव में स्वागत करते हुए कहा कि वन महोत्सव को उत्सव के रूप में मनाए | श्री वासु ने बचपन की यादें ताजा करवाते हुए बताया कि किस तरह आम की गुटली और नीम के बीज से पौधे तैयार करते थे तो वह पर्व/उत्सव की तरह हुआ करता था | आज उसी उत्सव की जरूरत हैं | श्री वासु ने कहा कि पृथ्वी का जो मूल स्वरूप हैं, उस मूल स्वरूप में, मानव द्वारा किए गये नुकसान, को भरना हैं तथा हमारे कार्यों से उसे थोड़ा बहुत भी भर पाई कर पाये तो ये बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। श्री वासु ने कहा कि प्राकृतिक वन जो वर्तमान में हमें संरक्षित क्षेत्रों में दिखते हैं ये परिस्थितिकी समय पैमाने (ecological Time scale) में बनते हैं, उनको हमारी गतिविधियों से चंद सालों में खत्म कर देते हैं, ये बड़ी चिंता का विषय हैं। चीजें बनती हैं (परिवर्तन होता हैं) लेकिन जिस गति से हो रहा हैं वह चिंता का विषय हैं | इन सब में विज्ञान को लावे, और उससे भी ज्यादा जरूरी हैं जो फील्ड में परिवर्तन हो रहे हैं उसको देखे (observe करें) तथा ज्यादा से ज्यादा लोगों से चर्चा करे | चर्चा करेंगे तो मूल रूप से ऐसी चीजें आएगी जिसको देखने से लगेगा कि नहीं, हम इस पृथ्वी की सेवा में आगे बढ़ेंगे | उन्होंने आह्वान किया कि मिलकर अच्छे से अच्छे पौधे तैयार करें | जोधपुर शहर व वृक्षारोपण की संभावना का जिक्र करते हुए वासु ने बताया कि यहाँ जितना वृक्षारोपण करे बड़ा अच्छा होगा तथा जोधपुर अच्छा हरा भरा रूप ले सकता हैं | हमको उसी रूप में आगे बढ़ना हैं |

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर श्री रघुवीर सिंह शेखावत, भा॰व॰से॰ , ने बदते तापमान (global warming) के मद्देनजर पौधरोपण द्वारा हरितमा की चादर ओढ़ाने का आह्वान करते हुए कहा कि यह हर व्यक्ति की नैतिक ज़िम्मेदारी होने चाहिए कि वे अपने आस पास के क्षेत्र में वृक्षारोपण कर वातावरण को शुद्ध रखने का प्रयास करें | श्री शेखावत ने पशिचमी राजस्थान के इस हिस्से के अधिक तापमान एव कम पानी की उपलब्धता का जिक्र करते हुए पौधरोपण हेतु उचित प्रजातियों का चयन करने पर ज़ोर दिया ताकि वे इस क्षेत्र की परिसिथतियों में भी जीवित रह सके, फलफूल सके । श्री शेखावत ने कहा वनीकरण (Afforestation) कार्यक्रम में भी स्थानीय प्रजातियों को महत्व दिया जाय | श्री शेखावत ने कहा कि पौधरोपण तथा उनके संरक्षण करने का यह संदेश गाँव-गाँव तक पहुँचना चाहिए |

समूह समन्व्यक (शोध) डॉ॰ आई॰डी॰आर्य ने कहा कि जिस तरह पानी बोतल में मिलने लगा, यदि पर्यावरण खराब होता गया तो कहीं पेड़ पौधों के अभाव में शुद्ध हवा की लिए भी ऐसी सिथति न बन जाय | अत: हमे पेड़ पौधों को और पर्यावरण को संरक्षित रखना चाहिए |

उप वन संरक्षक, वन्य जीव, श्री महेंद्र सिंह राठोड ने बताया कि पेड़ पौधे हमें देते ही देते हैं, इस वन महोत्सव का जो प्रयोजन वह पेड़-पौधों के लिए हैं लेकिन पेड़ लगाकर हम स्वय मानवता और जीव मात्र के लिए अपनी सुरक्षा का कवच बना रहे हैं | अत: जहां भी खाली भूमि मिले वहाँ वृक्ष लगाकर हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने का प्रयास करना चाहिए ।

पर्यावरण प्रेमी श्री प्रसन्नपूरी गोस्वामी ने पेड़ो के ऊपर, जगहों के नाम, लोकगीतों में, पक्षियों से संबंधित कहानियँ आदि का उदाहरण देते हुए बताया कि पूरा पर्यावरण हमारी संस्कृति में रचा बसा हैं लेकिन आधुनिक विकास के कारण हम इन पेड़ से जुड़े रहने की परम्पराओं से हटते जा रहे हैं, इसलिए अब इस तरह के वृक्षारोपण का कार्य करना जरूरी हो गया लेकिन केवल मात्र पेड़ लगाने से काम नहीं बनेगा, जब तक वह पेड़ अपने पाँव पर पूरा खड़ा न हो जाय, समर्पण भाव से उसकी देखभाल करनी चाहिए, धैर्य रखना चाहिए क्योंकि वृक्षारोपण का परिणाम देरी से आता हैं, पेड़ चाहे एक ही लगाओ परंतु उसे जिंदा रखो |

श्रीमती विमला सियाग ने कहा कि इस तरह के वन महोत्सव कि कार्यक्रम अपने व्यक्तिगत स्तर पर भी होने चाहिये, एक पौधा लगे या दस पौधे, ये सब स्वयं अपने लिए हैं तथा पौधारोपण के इस कार्यक्रम को हमें बहुत आगे बढ़ाना हैं, तभी इस पर्यावरण को बचा पाएंगे ।

कवि पूरण सिंह ने वर्ष पर्यन्त पेड़ पौधे लगाने का आह्वान करते हुए पेड़ पौधौं एंव पर्यावरण के भावों से ओतप्रोत गीत सुनाया |

श्री गणेश प्रजापत ने बड़े वृक्षों को स्थानांतरित करने जैसी तकनीकें की चर्चा करते हुए वृक्षों तथा उनके संरक्षण का महत्व बताया | श्री ओम प्रकाश राजेरिया ने भी पौधरोपण के बारे में बताया | जोधपुर विकास प्राधिकरण के सहायक वन संरक्षक श्री देवेंद्र सिंह भाटी, ने भी विचार प्रकट किए |

इससे पूर्व प्रारम्भ में श्री उमा राम चौधरी, भा॰व॰से॰ प्रभागाध्यक्ष कृषि वानिकी एव विस्तार ने वन महोत्सव की प्रासंगिकता इत्यादि के बारे में बताया तथा कार्यक्रम का संचालन करते हुए इसके विभिन्न पहलूओं का जिक्र किया |

वन महोत्सव के कार्यक्रम का शुभारंभ शुष्क वन अनुसंधान संस्थान के परिसर में मुख्य अतिथि एव अन्य आगन्तुकों द्वारा पौधारोपण कर किया गया जिसमें शुष्क वन अनुसंधान संस्थान के स्टाफ उनके परिवार के सदस्य वन विभाग के स्टाफ के सदस्य, स्वय सेवी संस्था के प्रतिनिधि एव अन्य पर्यावरण प्रेमियों ने भाग लिया | परिसर में विभिन्न स्थानो पर जामुन, बादाम, चन्दन, करंज, टेकोमा, गुड़हल, वोगेनविलिया इत्यादि के 100 से ज्यादा पौधों लगाए गए। इस अवसर पर आगंतुकों को लगभग 110 पौधे भी वितरित किये गये ।

कार्यक्रम की व्यवस्था/ आयोजन कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग की श्रीमती भावना शर्मा वैज्ञानिक - डी द्वारा की गई जिसमें डॉ॰ बिलास सिंह वैज्ञानिक- बी, श्री रतना राम लोहरा, अनुसंधान सहायक – प्रथम श्रीमति मीता सिंह तोमर तकनीक सहायक एव श्री तेजा राम का महत्ती सहयोग रहा ।

VAN MAHOTSAVA 2017
6 July, 2017

VAN MAHOTSAVA 2017
6 July, 2017
Venue – Arid Forest Research Institute, Jodhpur

VAN MAHOTSAVA 2017
6 July, 2017

6 July, 2017

7. विश्व ओज़ोन दिवस (दिनांक 16/9/17)

दिनांक 16/9/17 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में विश्व ओज़ोन दिवस मनाया गया, जिसके अंतर्गत संस्थान के सभागार में वैज्ञानिक परिचर्चा का आयोजन किया गया। समारोह में आफरी के वैज्ञानिक, अधिकारी एवं स्टाफ तथा स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, श्री रघुवीर सिंह शेखावत, भा.व.से. ने कहा कि इस तरह से ओज़ोन परत के लिए कदम उठाकर वैज्ञानिक जीत हासिल की गयी है, इससे यह प्रमाणित होता है कि पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विश्व समुदाय में है। हमें इसी तरह अन्य पर्यावरणीय खतरों के लिए भी खड़ा होना होगा तथा लोगों को जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों के प्रति संवेदनशील करते हुए इस तरह के मसलों का हल निकालना पड़ेगा। ओज़ोन परत की समस्या के लिए जो प्रयास हुए हैं, वो हमारे लिए सीख है कि दूसरी पर्यावरणीय चुनौतियों का भी इसी तरह मुक़ाबला करें।

संस्थान के निदेशक डॉ. इंद्रदेव आर्य ने ओज़ोन परत के संरक्षण, इस हेतु किए गए प्रयासों, परत के विघटन की प्रक्रिया एवं जिम्मेदार कारकों इत्यादि पर विवेचनात्मक वैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण दिया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.जी.सिंह ने ओज़ोन परत विघटन की प्रक्रिया एवं इसके लिए उत्तरदायी कतिपय कारकों पर चर्चा की। वैज्ञानिक श्री एन. बाला ने ओज़ोन परत विघटन तथा संरक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की सिलसिलेवार विवेचना की। वैज्ञानिक डॉ. तरुण कान्त ने भी ओज़ोन परत से संबंधित वैज्ञानिक पहलुओं को उजागर करते हुए जीवन पर ओज़ोन परत की महत्ता बताई तथा पराबेंगनी विकिरणों के प्रभाव की भी चर्चा की।

इससे पूर्व कृषि वानिकी एवं विस्तार के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी भा.व.से. ने विश्व ओज़ोन दिवस की महत्ता की चर्चा की तथा श्री चौधरी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए इससे संबंधित विभिन्न पहलुओं का भी जिक्र किया। कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ. बिलास सिंह ने सभी का धन्यवाद किया। आयोजन में श्री महिपाल अनुसंधान सहायक द्वितीय एवं श्री तेजाराम का सहयोग रहा।

What happened to the
OZONE LAYER
depletion?

InFocus